खुशहाली का खजाना खार्चिया गेहूं

मोती लाल मीणा, धीरज सिंह, ऐश्वर्य डूडी और **एम.के. चौधरी**
भाकृअनुप-काजरी, कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली-मारवाड़-306 401 (राजस्थान)

"राजस्थान के पाली जिले में मारवाड़ तहसील की खारी जमीन और खारे पानी जैसी विषम परिस्थितियों में भी गेहूं की सफल खेती हो रही है। यह लाल रंग का गेहूं है, जो 'खार्चिया' नाम से जाना जाता है। यह गेहूं यहां के किसानों को खुशहाल बना रहा है। देश की ऐसी भूमि जो लवणीय और क्षारीय होने के कारण खेती के लिए उपयुक्त नहीं है, वहां पर खार्चिया गेहूं की खेती वरदान बन सकती है।"

ऐसी मृदायें, जिनमें निष्क्रिय (उदासीन) घुलनशील लवणों की अधिक मात्रा के कारण बीज का अंकुरण एवं पौधों का विकास प्रभावित होता है, वे लवणीय मृदाएं कहलाती हैं। इन मृदाओं के संतृप्त घोल की वैद्युत चालकता 4 (ई.सी.) डेसी सीमन प्रति मीटर से अधिक, मृदा का पी-एच मान 8.2 से कम तथा विनियम योग्य सोडियम की मात्रा 15 प्रतिशत से कम होती है। लवणीय भूमि में सोडियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम एवं उनके क्लोराइड एवं सल्फेट अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। ये आसानी से पानी में घुल जाते हैं। गर्मियों में बढ़ते तापमान के कारण वाष्पीकरण दर बढ़ने से घुलनशील लवण मृदा सतह की ओर आ जाते हैं। ऐसे में पानी तो वाष्प बनकर आसमान में उड़ जाता है, जबकि भूमि की ऊपरी सतह पर सफेद रंग का लवण रह जाता है। इस प्रकार यह लवण पपड़ी बना लेता है। इसी कारण से ऐसी मृदाओं को कभी-कभी सफेद कल्लर भी कहा जाता है। इन मृदाओं में नमी तो बनी रहती है, परंतु अधिक परासरणीय दाब के कारण पौधों को आवश्यकतानुसार जल की उपलब्धता नहीं हो पाती है। इसके कारण उनकी बढ़वार एवं उत्पादन क्षमता पर विपरीत असर पड़ता है।

लवण प्रभावित भूमि में खेत की तैयारी पारंपरिक तरीके से ही करनी चाहिए, लेकिन जल प्लावन की समस्या से ग्रस्त भूमि में मेड़ बनाकर खेती करना अधिक लाभदायक रहता है। गेहूं की अच्छी पैदावार लेने के लिए खेत में उचित नमी की मात्रा तथा मिट्टी का भुरभुरा होना बहुत जरूरी है। इसके लिए सिंचित क्षेत्रों